Sc 2 + Ma 2

MODERN COLLEGE EXAMINATIONS & ASSESSMENT BOARD

HINDI — **GRADE 12 (LOWER SIX)**

Paper 2 Reading and Writing — **2nd June 2018**

1 hour 45 minutes

Additional materials: Answer Paper

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

Write your name, index number, form, paper number and name of your invigilator(s) in the spaces provided on the answer paper.
Write in dark blue or black pen on both sides of the paper.
Do not use paper clips, highlighters, glue or correction fluid.
Dictionaries are not permitted.

Answer **all** questions.
Write your answers in **Hindi** on the separate answer paper.
You should keep to any word limits given in the questions.
At the end of the examination, fasten all your work securely together.
The number of marks is given in brackets [ ] at the end of each question or part question.

GOOD LUCK!

पहले नीचे दिए निर्देश पढ़िए

परीक्षा के लिए आप जो भी काम दें उस पर छात्र संख्या और अपना नाम लिखें।
गहरी नीली या काली स्याही वाले कलम से कागज़ के दोनों ओर लिखें।
पेपर क्लिप, हाइलाइटर, गॉंद और करेक्शन-फ़्लुइड का प्रयोग न करें।
शब्दकोष का प्रयोग मना है।

सभी प्रश्नों के उत्तर दें।
उत्तर - पुस्तिका में अपने उत्तर **हिन्दी** में लिखें।
उत्तर, प्रश्नों में दिए गए शब्दों की संख्या तक ही सीमित रखें।
परीक्षा के अन्त में अपना सब काम सुरक्षित रूप से एक साथ बाँध दें।
प्रत्येक प्रश्न या प्रश्न-अंश के अंत में उसके निर्धारित अंक कोष्ठकों [ ] में दिए गए हैं।

This question paper consists of 5 printed pages.

© MCEAB 2018

Grade 12 Week 1

निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

शैरन लौवेन भारतीय मूल की न होकर भी भारत की नृत्य-कलाओं में पारंगत हैं और भारतीय नृत्य-कला को समर्पित भी हैं। अमरीका में एक यहूदी परिवार में पली शैरन का, बचपन से ही भारतीय नृत्य के प्रति लगाव देखकर उनकी माँ के उनके लिए नृत्य सीखने की व्यवस्था की। परन्तु भारतीय नृत्य सीखने की सुविधा न होने के कारण उन्होंने पश्चिमी नृत्य सीखना प्रारम्भ किया। शीघ्र ही वे विभिन्न संस्थाओं के नृत्य एवं नाटक के कार्यक्रमों में भाग लेने लगीं। प्रशंसा और नाम मिलने के उपरांत भी उनका मन संतुष्ट नहीं हुआ। सत्रह वर्ष की अवस्था में, उनकी माँ के प्रयासों से शैरन को गुरु के रूप में मिलीं मिनाती राय जो मणिपुरी नृत्य की कुशल नृत्यांगना थीं। नृत्य-साधना के साथ-साथ उन्होंने फाइन आर्ट्स और एशियन स्टडीज़ में एम.ए किया।

शैरन मणिपुरी नृत्य में प्रवीण हुईं और उनकी नृत्य-प्रतिभा, नृत्य-साधन, गुरु-भक्ति तथा भारतीय संस्कृति को अपनाने की चाह एवं चेष्टा उन्हें शीघ्र ही अमरीका तथा यूरोप के प्रसिद्ध नृत्य-मंचों पर ले आई। इन देशों का सम्मान पाकर उनका उत्साह तो बढ़ा परन्तु संतुष्टि नहीं मिली। अंत में गुरु से परामर्श करके, उनसे प्रेरणा पाकर और अपने माता-पिता से विदा लेकर 1973 में शैरन भारत आ गईं। वहाँ उन्होंने कृष्ण चन्द से मणिपुरी तथा गुरुमहाराज केलूचरण से दस वर्ष तक ओडिसी नृत्य की शिक्षा प्राप्त की। अब भारत में भी उनकी कला का मंचन होने लगा। उनकी प्रस्तुतियों के दर्शक न केवल साधारण लोग परन्तु कलाकार, कला पारखी और कला के पक्षधर भी होते। नृत्य के माध्यम से वे जो प्रस्तुत करतीं, चाहे वह सरस्वती वन्दना हो या कृष्ण लीला, प्रेम और वात्सल्य रस से भरी जीवन की झलकियाँ या श्रृंगार रस की प्रस्तुतियाँ, दर्शकों का मन मोह लेतीं। प्रेक्षागृह तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठता और दर्शकों के हृदय में उनकी सुन्दर भावभीनी छवि बस जाती। सैकड़ों पुरस्कारों से पुरस्कृत यह नृत्यांगना बड़े घोर संघर्ष और कड़ी तपस्या के बाद ही जीवन की इस ऊँचाई तक पहुँची हैं।

उन्होंने लन्दन के प्रोफेसर थॉमस ऑल्ट से विवाह किया और कालांतर में वे एक सुन्दर बेटी, तारा की माँ बनीं। दिल्ली में उनका निवास स्थान भारतीय संस्कृति का एक जीवित स्वरुप है। वहाँ सरस्वती, भगवान कृष्ण, गणेश, शिव जैसे देवी-देवताओं की मूर्तियाँ हैं, जिनकी वे विधिवत् पूजा करती हैं। शैरन हिन्दी भी धाराप्रवाह बोलती हैं और साड़ी-ब्लाउज़, गजरा-कजरा, माथे पर बिंदिया, पैरों में पायल और मंगलसूत्र पहनती हैं। वे मानती हैं कि वे बेशक यहूदी हैं पर विश्वास भगवान पर करती हैं। जब वे नृत्य करती हैं तो भगवान को अपने बहुत निकट पाती हैं। उनकी नृत्य-साधना के पच्चीस वर्ष पूरे हो चुके हैं। किन्तु उनका इस साधना से कभी भी मोह भंग नहीं हुआ। उनका कहना है कि भारत की मिट्टी ने उन्हें उनकी पहचान दी है, वे कैसे इस मिट्टी से अलग हो सकती हैं।

1. नीचे दी गई प्रत्येक परिभाषा के लिए उपरोक्त अनुच्छेद से उन शब्दों या उक्तियों को लिखिए जिनसे उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए।

उदाहरण : निछावर करना

उतर : समर्पित

(a) वह महिला जो नाचने में निपुण हो	P1	
(b) कुशलता प्राप्त करना	P2	
(c) सलाह लेना	P2	
(d) कुछ समय बाद	P3	
(e) बिना किसी हिचक के	P3	[5]

2. निम्नलिखित प्रत्येक शब्द/उक्ति का प्रयोग करके ऐसे वाक्य बनाइए, जिससे उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए।

प्रयासों, गुरु-भक्ति, प्रेरणा, मोह, घोर संघर्ष। [5]

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर, अनुच्छेद के वाक्यों की नकल न करके, हिन्दी में, तथा अपने शब्दों में दीजिए।

(a) शैरन लौवेन का भारतीय नृत्य के प्रति लगाव में आश्चर्य की बात क्या है? [3]

(b) क्या वे बचपन में भारतीय नृत्य सीख पाई थीं? इसका क्या कारण था और क्या परिणाम हुआ? [3]

(c) उनका जीवन का घोर संघर्ष और कड़ी तपस्या क्या थी? [3]

(d) यह कहना कहाँ तक उचित है कि शैरन भारत की ही बनकर रह गई हैं? [3]

(e) धर्म के प्रति शैरन की भावनाओं का उल्लेख कीजिए। [3]

भाग - 2

अब द्वितीय अनुच्छेद पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1979 में, दिनांक दस दिसंबर को जब औसलो में शांति का नोबेल पुरस्कार भारत की टेरेसा माँ, जो संसार में मदर टेरेसा के नाम से जानी जाती हैं, को प्रदान किया गया तो विश्व भर में प्रसन्नता की लहरें उमड़ पड़ी थीं। इस छोटी सी, नाजुक महिला का संसार के गरीबों के लिए निरंतर प्रयास और आंदोलन ने आज संसार भर में दरिद्रों और निराश्रितों के लिए अनेक आश्रम व चिकित्सालय खोले हैं।

1910 में, एलबेनिया के एक कैथलिक परिवार में इनका जन्म हुआ था जहाँ वे एक बड़े मकान में रहती थीं जिसके विस्त त उद्यान में फलों के अनेक वृक्ष थे। इनके परिवार में प्रेम, सुख और प्रसन्नता की कोई कमी नहीं थीं। बारह वर्ष की आयु में ही टेरेसा माँ के हृदय में संन्यासिनी बनने की इच्छा जाग्रत हुई। बचपन से ही उहोंने ईसाई धर्म के प्रचारक और कैथलिक संन्यासियों की अनेक कथाएँ सुनी थीं। उन्हें यह भी पता चला कि संन्यासिनियों का एक विशेष समुदाय, लौरैटो की संन्यसिनियाँ भारत के बंगाल क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। 18 वर्ष की आयु में एक आध्यात्मिक आह्वान ने उन्हें अपने आपको ईसा मसीह की सेवा में समर्पित कर देने की प्रेरणा दी और उन्होंने संन्यासिनी बनने का प्रार्थना-पत्र दे दिया। लौरेटो धर्मस्थान से उनको आयरलैंड होते हुए बंगाल जाने की अनुमति मिली। बंबई मेल नमक जहाज़ से वे कलकत्ता पहुँचीं। अपनी शिक्षा और दीक्षा के लिए पहले उन्हें दार्जिलिंग जाना पड़ा। अंग्रेज़ी के साथ-साथ उन्होंने बंगला भाषा सीखी और थोड़ी बहुत बोलचाल की हिन्दी भी सीख ली। संन्यासिनी की शिक्षा पूर्ण करके वे कलकत्ता की सैन्ट मैरीज़ कॉनवैन्ट की अध्यापिका और बाद में प्रधानाचार्या बनीं। किन्तु द्वितीय विश्व युद्ध में जापान के समावेश से तथा 1942-43 के भयंकर अकाल ने कलकत्ता में हलचल मचा दी। शहर में भूख और प्यास से पीड़ित असंख्य लोगों की कतारें लग गईं। 1947 में भारत का विभाजन हुआ और सामुदायिक झगड़ों ने इस शहर की परिस्थिति और दयनीय बना दी। टेरेसा माँ ने फिर से ईश्वर की पुकार सुनी और वे सैन्ट मैरीज़ के सुखमय जीवन को त्याग कर मार्ग के दरिद्र और बेघर दीन-दुःखियों की सेवा में समर्पित हो गईं। निवास स्थान कलकत्ता होते हुए भी वे संसार के पीड़ित दरिद्रों के लिए आजीवन कार्य करती रहीं। विश्व ने उन्हें प्रेम, सम्मान और अनेक पुरस्कारों से सुशोभित किया है। आज इस दिवंगत महात्मा की प्रेरणा से उनके कार्यकर्ताओं ने उनके प्रयास को जीवित रखा है।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर, अनुच्छेद के वाक्यों की नकल न करके, हिन्दी में, तथा अपने शब्दों में दीजिए।

(a) टेरेसा माँ को नोबेल पुरस्कार मिलने पर विश्व में प्रसन्नता के क्या कारण थे? [3]

(b) टेरेसा माँ के बचपन पर प्रकाश डालिए। [3]

(c) संन्यासिनी बनने के लिए उनको जो प्रयास करने पड़े उनका उल्लेख कीजिए। [3]

(d) किन कारणों से प्रभावित होकर उन्होंने सैन्ट मैरीज़ कॉनवैन्ट का काम त्यागा। [3]

(e) उनकी मृत्यु के साथ ही उनके जीवन का उध्येश्य भी समाप्त हो गया। क्या आप इससे सहमत हैं? कारणों सहित उत्तर दीजिए। [3]

5. (a) उपरोक्त दो अनुच्छेदों में दोनों उल्लेखनीय महिलाओं की, सारांश में, एक-दूसरे से तुलना कीजिए। [10]

(b) अपने देश के परिवेश को ध्यान में रखते हुए यह बताइए कि आपके देश में महिलाओं को अपने शिखर पर पहुँचने की क्या सुविधाएँ हैं? [5]

- दोनों प्रश्नों के उत्तर [5(a)(b)] 140 शब्दों की सीमा तक ही रखिए।